वैदिक धर्म।

वैदिक तत्वज्ञान प्रचारक मासिक पत्र।

वैदिक धर्म के ओजस्वी विचार स्पष्ट रूपमें बतानेके लिये ही यह मासिक है। यदि आप इस मासिक के लेख पढेंगे, तो वैदिक मंत्रोके गूढ और उच्च विचारोंके साथ आपका परिचय होगा।

योग साधन पर अनुभव के लेख इस मासिक में प्रकाशित होते हैं। इनको पढनेसे योग मार्गका ज्ञान सुगमतासे प्राप्त करके आप शारीरिक स्वास्थ्य, इंद्रिय संयम तथा चित्तकी प्रसन्नता का अनुभव लेते हुए अपनी शक्ति विकसित करनेके सुगम उपाय जान सकते है।

वार्षिक मूल्य ३॥) रु है। शीघ्र ग्राहक बन जाइये।

मंत्री—स्वाध्याय मंडल, औंध (जि सातारा)

आगम निबध माला। ग्रंथ १६

ॐ

वैदिक जल-विद्या।

लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर
स्वाध्याय मंडल, औंध (जि सातारा)

द्वितीय वार १०००

सवत १९८०, शक १[illegible], सन १९२[illegible]
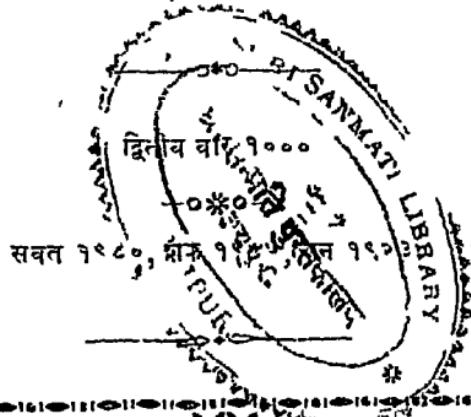
जल-विद्या।

वैदिक जलविद्या आरोग्य के साथ संबंध रखती है। रोग दूर करना, आरोग्य सुरक्षित रखना, दीर्घजीवन प्राप्त करना और बलका संवर्धन करना इत्यादि सिद्धियों के लिये जलका योग्य रीतिसे योग्य उपयोग करने का उपदेश देनेवाले वेदके अनेक मंत्र इसी जलविद्या के प्रकाशक हैं। इस लेख में उनमें से थोडेसे मंत्रोंका विचार किया है। विद्वान पाठक अधिक खोज करेंगे तो जनतापर बहुत ही उपकार हो सकते हैं।

औंध, [जि. सातारा]
१ कार्तिक सं १९८०

निवेदक
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर
स्वाध्याय-मंडल।

वेदमे अनेक विद्याओंका उपक्रम है। वेदका पठन पाठन यदि वैदिक रीतिसे चलने लगेगा, तो वैदिक विद्याओंका प्रचार और विस्तार हो सकता है। वेदकी भाषा बहुत कठिन नहीं है, परतु वैदिक शब्दोंका आतरिक भाव तथा शब्दार्थका मर्म समझना सुगम कार्य नहीं है। इसलिये बीसियो वर्षतक सैंकडो पडित नि'पक्ष पातकी दृष्टिसे इस विषयकी खोजके लिये लगने चाहिएं। आज कल किसी किसी स्थानपर वेदविद्याका अन्वेषण प्रारभ हो गया है, इसमें कोई संदेह नहीं। परतु पूर्वग्रहसे जिनका मन कलुषित हुआ है, वे अपने ही सिद्धात वेदमे देखने लगते हैं। इस प्रकारके लोग वेदका सत्य अर्थ करनेके लिये अयोग्य है।

वेदके अतर्गत प्रमाणोंसे ही वेदका अर्थ स्वय प्रकाशित होना आवश्यक है। जब आतरिक प्रमाणोंपर दृष्टि रखी जायगी, तब अन्य बाह्य प्रमाणोंकी युक्तता और अयुक्तता विना संदेह स्पष्ट हो सकती है।

इस समय आतरिक प्रमाणोंसे वेदका अर्थ करनेमें अशुद्धिया भी हो सकती है, क्योंकि आतरिक प्रमाणोंकी कसौटी ठीक प्रकारसे साध्य होनेके लिये जिस प्रकार चारों वेदोंकी उपस्थिति

चाहिए और सपूर्ण वैदिक वाङ्मयका परिज्ञान जिस प्रकार चाहिए, वैसा इस समय किसीको नही है। इसलिये प्रामाणिक प्रयत्न करनेपर भी अशुद्धि होना संभव है। परतु जिस प्रकार चूहोके डरके मारे मकान बनाना लोक बद नहीं करते उसी प्रकार अशुद्धियोंके भयके कारण वेदविद्याके संशोधनका कार्य किसीको बंद नहीं करना चाहिए। यदि किसीके लेखमें अशुद्धि हो गई तो आगे आनेवाले आविष्कारक पडित उसको ठीक करेंगे। सैंकडों मनुष्योंके प्रामाणिक प्रयत्नसे वेद विद्याका पुनरुद्धार हो सकता है। अन्यथा दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

आज इस लेखमे वेदकी जलविद्याके विषयमें कुछ थोडे विचार संगृहित करनेका यत्न करना है। विचिकित्सक पाठक इनका विचार करें और सोचें कि वास्तवमे वेदका मतव्य कितना उच्च और श्रेष्ठ है।

इस लेखमे 'जल' के विषयमे विचार करना है। इसलिये सबसे प्रथम जलके नामोका विचार करेंगे। निघण्टु अ. १।१२ में जलके सौ नाम दिये हैं। उनमें 'जन्म' शब्द है। जो जन्म लेता है उसका नाम 'जन्म' हो सकता है। इस वैदिक नामसे यह बात स्पष्ट होती है, कि पानीका जन्म होता है. अथवा पानी उत्पन्न होता है। जन्म प्राप्त करनेका तात्पर्य बनने अथवा उत्पन्न होनेसे है। सृष्टिके सब ही पदार्थ जन्मते है, फिर वेदने जलका ही नाम 'जन्म' क्यों रखा, इस बातका पता लगाना आवश्यक

है। अन्य पदार्थोंके जन्मकी अपेक्षा पानीके जन्ममें कुछ न कुछ विशेषता अवश्य होगी। जलका जन्म कुछ असाधारण प्रतीत होता है। आधुनिक विज्ञान—शास्त्र कहता है, कि दो वायुओंके संयोगसे जलका जन्म होता है। अर्थात् आधुनिक विज्ञानके अनुसार भी जलका ' **जन्म** ' नाम सार्थ हो सकता है। परतु इसका विचार करनेके पूर्व जलवाचक अन्य नामोंका यहा विचार करेंगे।

' **भूतं, भुवनं, भविष्यत्** ' ये तीन शब्द वेदमें जल वाचक है। पूर्वोक्त निघण्टुका भाग देखिए। ' भु ' धातुसे ये तीनो शब्द बनते हैं और ' भु ' धातुका अर्थ To be to become, to be born, to be produced होना, बनना, जन्म होना, बनाया जाना, यह है। अर्थात इन अर्थोंका विचार करनेसे उक्त शब्दोंक अर्थ ' **बनता था, बनता है, और बनेगा** ' इस प्रकार हो सकते हे। इन अर्थोंका तात्पर्य यह है कि जिन नियमों के अनुसार जलका जन्म पूर्व समयमे होता था. उसी प्रकार अब भी हो सकता है और भविष्यत्में भी होगा। जल बननेके जो नियम है बिल्कुल अटल है, यह भाव उक्त अर्थोंमे टपकता है।

जलके सो नामोंमे ' रेतः ' शब्द है। अर्थात वेदमे ' रेतः ' का अर्थ ' उदक ' है। साधारण भाषामें ' रेत ' शब्दका अर्थ पुरुषका वीर्य है, परंतु वेदमें जल अर्थमें रेत शब्द प्रयुक्त है। इस शब्दका भाव मनमें धारण करनेसे ब्राम्हण ग्रंथोंमे आई हुई मित्रावरुणोंकी एक कथा विशद हो सकती है। परंतु उक्त मैत्रा-वरुणीय गाथा देखनेके पूर्व निम्न वचन देखिए।

मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्याऽवताम् ॥

वा. यजु. २ । १६ । शत. ब्रा. १ । ८ । ३ । १२

'मित्र और वरुण वृष्टि करके तुम्हारी रक्षा करें ।' इस मन्त्रमें कहा है कि जलको उत्पन्न करनेका कार्य मित्र और वरुणोंका है। मित्र और वरुण दोनों देव जल उत्पन्न करते हैं और वृष्टि बरसा देते हैं। अर्थात् पानीका जन्म मित्रवरुणोंके संबंधसे होता है इनमें स्त्रीपुरुषसंबंध नहीं है। दोनों पुरुषही हैं और दोनों मिलकर जलको उत्पन्न करते हैं। यही भाव अथर्ववेदकी श्रुतिमें है।

मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती तौ मावतां ॥

अथर्व. ५ । २४ । ५

'मित्र और वरुण ये वृष्टिके अधिपती हैं. वे दोनों मेरा रक्षण करें।' इस श्रुतिमें भी मित्रावरुणोंका संबंध वृष्टि अर्थात् जलके साथ बताया है। इस संबंधका विचार करते हुए आप मैत्रावरुणीय गाथाका विचार कीजिये।

मित्रावरुणोंकी कथा — भगवान देवदेवेश्वर इन्द्रके दरबारमें सब देव विराजमान हुए थे, उनमें अपने अपने स्थानपर मित्र और वरुण भी बठे थे दरबारके कार्य समाप्त होनेके पश्चा अप्सराओंका गायन और नाच शुरू हो गया। जब उर्वशी नाचने लगी तब मित्रावरुण मोहित हो गये और उनसे रेतका स्खलन हो गया—

मित्रावरुणयो रेतश्चस्कन्द ।

मित्रावरुणोंसे एकदम रेत स्खलित हो गया। यदि यहा रेत

शब्दका अर्थ उदक मन लिया जाय और मित्र वरुणोंको वायु माना जाय, ते उक्त कथाका बीभत्स और अश्लील भाव हट जाता है, और प्रतीत होने लगता है, कि यह एक निसर्गकी घटनापर रूपक रचा है।

ऐतिहासिक लोक समझते हैं. की यह कथा इसी प्रकार बनी थी। परतु ऐसा माननेमें कई दोष प्रतीत होते है। (१) स्वर्गमें पुण्य करनेवाले धार्मिक लोक जाते हैं, वहा वारागनाओंकी क्या आवश्यकता है? धार्मिक लोक वेश्यागमन नही करते । (२) यदि वहा स्वर्गमें भी वेश्याए हैं ऐसा माना जाय, तो भी मित्र और वरुण ये दो (पुण्यकृतौ राजानौ । निरु) पुण्य कर्म करनेवाले राजा थे । ऐसे सदाचारि राजाओंका भर दरबारमें दोनोंका एकदम वीर्य स्खलन होना यह असभव प्रतीत होता है तथा इसको सत्यता माननेपर भी इस निज अथवा गुप्त बातका सब जगत्में प्रचार क्यों किया गया? इत्यादि विचारसे पता लग सकता है कि यह व्यावहारिक घटना नही है, प्रत्युत कुछ आलकारिक गूढ इस कथामें अवश्य है।

' रेत ' शब्दका अर्थ वैदिकभाषामें ' उदक ' है, यह बात पूर्वोक्त निघंटुके आधारसे बताई है। यदी यह अर्थ इस गाथामें देखा जायगा तो सब अश्लील भाव लुप्त हो जाता है। और इस बातका संभव प्रतीत होने लगता है, कि कदाचित मित्र और वरुण ये दो वायु होंगे कि जिनसे जल उत्पन्न होता है। मित्रा

वरुणोंसे रेतकी उत्पत्ति हो गई, अर्थात् दो वायुओंके संयोगसे जलकी उत्पत्ति हो गई, ऐसा अर्थ बिलकुल सीधा प्रतीत होता है।

इन्द्रके दरबारके विषयमें हमें बहुत दूर जानेकी जरूरत नहीं है। प्रत्येक रात्रीमें हम आकाशमें स्वर्गका दर्शन करते हैं। चंद्र, गुरु, शुक्र, शनि आदि सब ग्रह तारा और नक्षत्र गण जहां रहते हैं, वह ही इन्द्रका दरबार है। दूरबीनसे इसका दर्शन दिनके समयमें भी हो सकता है। अर्थात यह खगोल ही स्वर्ग है। इस पृथ्वी लोकको ' इह लोक, ऐहिक, मृत्यु लोक कहते हैं ' और ऊपरले तेजस्वी खगोलको ' आमुष्मिक, स्वर्गलोक ' कहते हैं। उपनिषदोंमें भी ' अस्मिल्लोके अमुष्मिल्लोके अर्थात इस लोकमें और उस लोकमे ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं। तात्पर्य जैसा यह भूलोक मनुष्योंको प्रत्यक्ष है उसी प्रकार स्वर्ग भी प्रत्यक्ष दृश्य है अन्यथा ' अमुष्मिल्लोके ' इस शब्दका कोई तात्पर्य ही नहीं है। ' यह और वह ' ये शब्द जैसे प्रत्यक्ष विषयक होते हैं उसी प्रकार ' अस्मिन्—अमुष्मिन ' ये शब्द प्रत्यक्षपर ही हैं। अस्तु। इस ग्रह तारा नक्षत्र मंडलके स्वर्गमें पूर्वोक्त कथाका चमत्कार होता है, यह भाव उक्त कथामें स्पष्ट है।

स्वर्गके सूर्यचन्द्रादि देव प्रत्यक्ष दीखते हैं, उनका व्यवहार हमें प्रत्यक्ष है, वे भ्रमण करते हैं, किसी समय एक दूसरेके पास जाते हैं पश्चात् दूर होते जाते हैं, यद्यपि उनका वार्तालाप हम श्रवण नहीं कर सकते तथापि उनका भ्रमणादि व्यवहार हमें

प्रत्यक्ष है । पुराणोंके कथाभाग यदि ठीक प्रकारसे ज्ञात होने हैं तो इस स्वर्गधामकी कल्पना से ही हो सकते हैं । इस आकाशरूपी स्वर्गमें अप्सरागण कौन हैं' उक्त देवताओंके दर्बारमें कौन अप्सराएं हैं कि जो नाचती हैं? इस प्रश्नका उत्तर ' अप्—सरः ' शब्द ही दे सकता है । वैदिक अथवा संस्कृत भाषामें प्रत्येक शब्द उस उस पदार्थका स्वरूप अच्छी प्रकार व्यक्त करता है । यही एक सुभीता है कि जिसके आधारसे वैदिक उपदेशका गूढ व्यक्त किया जा सकता है ।

' आप्' अर्थात् जलके आश्रयसे जिसका ' सरण ' अर्थात संचार होता है उसका नाम ' अप्—सरः ' (अप्सु सरंति इति अप्परसः । अमरकोश—क्षीरस्वामी टीका १।१।११) अप्सरा होता है । पर्जन्य कालमें आकाशमे मेघ आते हैं, मेघोंकी भयानक गर्जना होती है, बिजलियोंका नाच शुरू होता है और वृष्टि होती है । बिजलियां मेघोंके आश्रयसे यहां नाचती है । बिजली और जलका इस प्रकार सबंध है । जलके आश्रयसे विद्युतका संचार होता है, यही ' अप्—सर ' पन है । यद्यपि केवल शुद्ध उदक विद्युतका संचार करनेके लिये योग्य नहीं है, तथापि साधारण जल विद्युतके लिये (Good conductor) अच्छा प्रवाहकारी है इसमें कोई संदेह नहीं है । यही भाव स्वयं ' अप्सर : ' शब्दसे निकलता है ।

अप्सरागणोंका नाच भगवान इन्द्रके दर्बारमें चलता रहता है इस बातका अनुभव पाठकगण वर्षाकालमे वारवार देख सकते

हैं। जब अप्सराओंका नाच होता है, उस समय मित्र और वरुण नामक जलदेवोंसे रेत अर्थात जल गिरने लगता है अर्थात् वृष्टि होती है। इत्यादि रूपक यहां स्पष्ट ज्ञात हो सकता है। अब अप्सराओंके कुछ अन्य अर्थ यहां देखना उचित है—

(१) घृताची—(घृत) उदकका अंचन अर्थात् प्रवाह करनेवाली। यह एक अप्सराका नाम है। यह विद्युतके लिये बिलकुल सार्थ होता है।

(२) उर्वशी—(उरु वशे यस्याः) जिसके आधीन सब कुछ है उस विद्युत्को उर्वशी कहते हैं। विद्युतके आधीन जगतके अनंत पदार्थ हैं यह बात सुप्रसिद्ध है। इसका दूसरा अर्थभी मनन करने योग्य है। 'उरु बहु अश्नुते' जो बहुत भक्षण करती है। विद्युतके पतनसे किस प्रकार नाश होता है यह तथा अन्य बातें देखनेसे इस बातका ज्ञान हो सकता है। कि विद्युतका सर्व भक्षकत्व किस प्रकार है। 'सर्वत्र व्यापक' ऐसाभी इससे एक भाव निकलता है।

'पुरुरवा और उर्वशी' का संबंध नाटक और पुराणोंमें प्रसिद्ध है। 'पुरु-रवा' का अर्थ 'जिसका बडा आवाज है' ऐसा है मेघोंका गडगडाट इस शब्दके अर्थसे ध्वनित होता है। इसलिये 'पुरु-रवा' शब्द मेघवाचो है और उर्वशी शब्द विद्युत वाचक है। निरुक्तकार कहते हैं—

पुरू-रवा बहुधा रोरूयते ॥

निरु. ५।४।४६

' जो अनेक प्रकारसे बडा बडा शब्द करता है वह पुरूरवा समझीए। ' मेघ और विद्युतका संबध यहा स्पष्ट है। अस्तु। इस प्रकार अप्सराओंका विद्युत होना और विद्युतका मेघो और जलधरोंके साथ संबध होना उक्त रूपकका विशेष स्पष्टीकरण स्वय करता है। विद्युतके चमकाहटके साथ मेघोंसे वृष्टि होगई इतनीही बात उक्त कथामें दर्शाई है। अस्तु। इतना देखने पर भी मित्रावरुणोंके स्वरूपका बोध नही होता। क्यों कि मित्रावरुण मेघोंमें रहते है ऐसा किसी स्थानपर नही कहा। इसलिये मित्रावरुणोंका स्वरूप कुच्छ विलक्षण होना आवश्यक है। अब वेदमन्त्रोंमें देखेंगे कि उनका स्वरूप क्या है—

मित्रं हुवे पूतदक्षं
वरुणं च रिशादसं।
धियं घृताचीं साधन्ता॥
ऋ. १।२।७

यह मत्र वायुसूक्तके अदर मित्रावरुण देवताका है। इस मत्रके तीन खंड हैं। उनका अर्थ निम्न प्रकार है—

(१) पूत-दक्षं मित्रं हुवे।—बलवान मित्रवायुका मैं स्वीकार करता हू।

(२) रिशाऽदसं च वरुणं हुवे।—जग (मोरचा Rust) चढानेवाले वरुण वायुको भी मैं लेता हूं।

(३) घृताऽचीं धियं साधन्ता ।—ये दोनों जल उत्पन्न करनेका कार्य सिद्ध करते है।

इस मंत्रार्थके साथ उक्त कथाकी तुलना करनेसे जलके जन्मका वृत्तांत ज्ञात हो सकता है। अब मित्र और वरुण कौन हो सकते हैं इसका विचार करेंगे।

' वरुण ' शब्दका विशेषण ' रिश–अदस् ' उक्त मंत्रमें देखिए। ' रिश–अदस् ' का अर्थ दूसरोंका स्वरूप विगाडनेवाला। ' रिश्, रिष्, रुश्, रुष् ' इन धातुओंका अर्थ 'विकृत' करना, दुःख देना है। इनके रूप ' रिष्ट, रुष्ट (Rust) ' ऐसे होते हैं। इंग्लिश भाषाका Rust शब्द इस धातुसे ही बनना उचित है। यद्यपि कोशोंमें ' रुधिर ' से इसका संबंध जोड दिया है, तथापि इतना दूरान्वय करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। 'रुष्' धातुसे सीधा ' रुष्ट (Rust) ' बनता है।

आक्सिजन (Oxygen gas) का धर्म (Oxidize) जंग चढाना है। लोहा आदि धातुओंपर जंग इसी वायुसे होता है। मूल धातुका स्वरूप विगाडना इसका धर्म है और वह ही ' रिश्–अदस् ' शब्द बता रहा है। इससे पता लग सकता है कि वरुण वायु आक्सिजनका वाचक होगा। ' वरुण ' शब्दका अर्थ वरने अर्थात् चुनने और पसंद करने योग्य है। आक्सिजन वायु सब प्राणिमात्र अपने जीवनके लिये पसंद करते है। प्राणियोंका जीवन इसके विना नहीं हो सकता, इसलिये यह प्राणवायु है, ऐसा कहा जा सकता है।

वरुण वायुका इस प्रकार ज्ञान है जैसे मित्रवायुका ज्ञान तर्कसे भी हो सकता है। प्राय: यह हैड्रोजन वायु होगा। क्यों कि 'मि-त्र' शब्द 'मा माने' धातुसे बनता है। मिननेवाला, मापनेवाला ऐसा इसका शब्दार्थ है। इंग्लिश भाषामें Meter, metre शब्द इसी 'मित्र' का रूपान्तर है। 'मा' धातुसे 'मित्र' शब्द बनता है और 'मित्र' शब्दसे Meter, metre शब्द बनता है। इसके और शब्द देखिए---

(१) थर्मो-मीटर Thermo-meter	=घर्म-मित्र=उष्णता मापनेका यंत्र।
(२) ब्यॉरो-मीटर Baro-meter	=भार-मित्र=भार मापक यंत्र।
(३) ज्यॉ-मीटर Geo-meter	=गो-मित्र=भूमिति शास्त्रज्ञ।
(४) हैड्रो-मीटर Hydro-meter	=आर्द्र-मित्र=घनतामापक यंत्र।
(५) पायरो-मीटर Pyro-meter	=वह्नि-मित्र=अग्निमापक यंत्र।
(६) लाक्टो-मीटर Lacto-meter	=रस-मित्र=गोरस मापनेका यंत्र।
(७) ज्यॉ-मेट्री Geo-metry	=गो-मित्र=भूमापन विद्या।

इन शब्दोंके प्रयोगोंसे 'मित्र' शब्दका Meter शब्दके साथ किस प्रकारका संबंध है इसका ज्ञान हो सकता है। छंद वाचक

meter शब्द है। वहा भी इसका अर्थ 'परिगणित अक्षर' इतना ही है। अर्थात् मित्र शब्दका अर्थ मिननेवाला, मापने और गिननेवाला, यह सर्वत्र सार्थ होता है। मात्रा, मित्र, मीटर metre आदि सब शब्दोंमे उक्त भाव ही है।

इसलिये 'पूतदक्ष मित्र' का अर्थ 'अन्य पदार्थोंका तोल अथवा माप बतानेवाला बलवान वायु' इतना है। हैड्रोजनसे सबका तोल किया जाता है। इसलिये जलके घटकोंमें मित्रवायु हैड्रोजन ही संभवत. हो सकता है। 'दक्ष' शब्दका अर्थ To increase अर्थात् आकारसे बढना है। यह गुण भी हैड्रोजनके विषयमे संगत हो सकता है। 'पूत' शब्दका अर्थ (Pure) शुद्ध है। शुद्ध हैड्रोजन वायु जो सबका तोल करनेवाला है, वह और प्राणवायु मिलकर जल उत्पन्न करनेका कार्य करते हैं, यह उक्त मत्रका आशय है।

'मे पूतदक्ष मित्र वायुको लेता हू और रिशादस वरुणको लेता हूं। ये दोनों मिलकर जल उत्पन्न करनेका कार्य करते है।' यह उक्त मत्रका शब्दार्थ है। पाठक यहा जान सकते हैं कि उक्त शब्दोंमें कितना गूढ अर्थ भरा है।

इस सब वर्णनसे जलका **जन्म** नाम कितना सार्थ है, इस बातका बोध हो सकता है। मित्रावरुणोंका जलके साथ संबध और पूर्वोक्त मैत्रावरुणीय गाथाका गूढार्थ यहां स्पष्ट हो सकते है। वेदमत्रोंके गूढ आशयको लेकर ब्राह्मण और पुराणोंमें बडी बडी कथाए बनी है। उन कथाओंका तबतक आशय

नहीं समझ सकता, जबतक उनका संबंध मंत्रोंके साथ ज्ञात नहीं होता। इससे वेदके स्वाध्यायका कितना महत्त्व है इस बातका परिज्ञान हो सकता है।

अस्तु। अब जलवाचक अन्य नामोंका विचार करेंगे। (१) उदकके सौ नामोंमें 'अमृत' शब्दका पाठ किया है। देव जिस अमृतका पान करते हैं वह अमृत शुद्ध जल ही है। जो अन्य पेय हैं, जो शराब, भंग, चहा, काफी आदि नामसे प्रसिद्ध हैं सबके सब घातक हैं। शुद्ध जलके सेवनसे शरीरका आरोग्य प्राप्त होता है। (२) जलका दूसरा नाम 'सुख' है। इससे सूचित होता है कि शुद्ध और पवित्र जलके प्रयोगसे शरीरके सब (ख) इंद्रिय (सु) उत्तम अवस्थामें रहते हैं और मनुष्यको उत्तम आरोग्य प्राप्त होता है। (३) उदकका तीसरा नाम 'अ–क्षर' है (न क्षरति न क्षारयति इदं अक्षरं) 'क्षर' का अर्थ To waste away अर्थात् नाशको प्राप्त होना है। क्षय नपेदिक आदि रोग जिनमें शरीरको क्षीणता होती रहती है, उनका बोध 'क्षर' शब्दसे होता है। जिसके सेवनसे क्षय आदि विनाशक रोग दूर होते हैं उसका नाम 'अ–क्षर' होता है। 'क्षय और अ-क्षय' ये शब्द 'क्षर और अ-क्षर' के समानही हैं। जलप्रयोगसे किन किन व्याधियोंका शमन हो सकता है इस बातका ज्ञान इन शब्दोंके विचारसे ही हो सकता है। पाठकोंमें जो वैद्य और डाक्टर होंगे उनको उचित है कि वे इन गुणोंका और नामोंका विचार करें और

जल प्रयोगसे ही आरोग्य संपादनका मार्ग सुगम करें। ताकि लोकोंका पैसा और आरोग्य दवाइयोंकी आग्निसे नष्ट न हो सके।

(४) उक्त 'अक्षर' शब्दके अर्थ बतानेवाला उदक वाचक 'अ-हि' शब्द है। जिससे हान अथवा नाश नहीं होता, वह 'अहि' किंवा 'अ-हीन' उदक है। शुद्ध उदकके सेवनसे शरीर पर जो परिणाम हो सकते हैं, उनका ज्ञान इन शब्दोंके अर्थोंमें पाठक देखें और शराब आदि अनाय-कारक पेयोंसे दूर रह कर, इस अमृत जलका सेवन करके ही अमर बनें। (५) उदक वाचक 'अ-क्षित' शब्द भी उक्त अर्थका द्योतक है।

(६) उदक वाचक 'रेतः' शब्द पूर्वस्थलमें दियाही है। इसी अर्थका वाचक 'शुक्र' शब्द वेदमें आता है। वीर्य तेज और पावित्र्य ये इसके अर्थ हैं और शुद्ध उदकके यही गुण है। शुद्ध उदकके सेवनसे वीर्य स्थिर, पवित्र और सतेज होता है तथा अन्य मादक पेयोंके सेवनसे वही वीर्य अस्थिर और निस्तेज होता है। इसलिये जो ब्रह्मचर्य रखना चाहते हैं उनको चहा काफी, सोडावाटर आदि क्षुद्र पेय पीना नहीं चाहिये। शुद्ध शीत जलसे गुप्त इंद्रिय तथा उसके आसपासका स्थान धोने और अत्यंत निर्मल रखनेसे वीर्यकी स्थिरता प्राप्त होती है; वह प्रदेश मलिन रखनेसे उष्णता उत्पन्न होकर वीर्य पतला होता है। इस विषयका अनुभव कई विद्यार्थीयोंपर लिया है, कि जिनका ब्रह्मचर्य भ्रष्ट हुआ था; परंतु शीत जलके प्रयोगसे उनको ऐसा आराम

प्राप्त हुआ कि जैसा दवाइयोंसे प्राप्त होना असंभव था। ब्रह्मचर्य रक्षाके लिये इस भागपर शीतजलका प्रयोग अत्यत लाभदायक होता है।

(७) जलवाचक नामोंमें ' तेजः , ओजः , सह. ' शब्द हैं। शुद्ध जलके सेवनसे शरीरका तेज, ओज अर्थात बल, और शरीरकी सहन शक्ति प्राप्त होसकती है। अपेयपान करनेवालोंको उचित है कि वे शुद्ध जलके इन गुणोंका परिशीलन करें और बुरी आदतोंसे अपने आपको बचावें।

(८) जल वाचक नामोंमें ' पवित्र ' शब्द आगया है। स्नानसे शरीर आदिकी पवित्रता होती है। बस्ति आदिसे शरीर की आतरिक पवित्रता होती है। और नस्य विधिसे नासिका आदि इंद्रियोंकी भी पवित्रता होती है। जलप्रयोगसे इंद्रिय पवित्र किया जा सकता है और इन प्रयोगोंसे अपूर्व लाभ होता है।

(९) उक्त शब्दोंसे जल चिकित्साकी सूचना मिलती है। जलचिकित्सा शास्त्र (Hydropathy) वेदमें है। इसका विस्तार पूर्वक वर्णन किसी अन्य समयमें किया जायगा, यहां जलवाचक दो शब्द ही देखने योग्य हैं। भेषजं (Medicine), जलापं (Healing) ये दो शब्द जलवाचक हैं। इनमें वैदिक जलचिकित्साकी स्पष्ट कल्पना प्राप्त हो सकती है। जलका 'भेषज' नाम बताता है कि जलमें सब दवाइयां हैं, तथा 'जलाप' शब्द बताता है कि उसमें (Healing power) आरोग्यवर्धनके गुण हैं। वेदका यह उपदेश है। सब औषधियोंका कार्य अकले

जलसे साध्य हो सकता है। फिर वैदिकधर्मी लोक मारे मारे दवाइयोंके पीछे क्यों अपना आरोग्य और पैसा गमा रहें हैं ? वेदके ये शब्द विशेष हेतुसे बने हैं। ये गपोडे नहीं है। जिनका विश्वास न होगा उनको उचित है कि वह जलप्रयोगका अनुभव लेवे और देखे कि कितना लाभ होता है। परंतु लोकोंका यह आश्चर्य प्रसिद्ध है, कि वे सुलभ साध्य अमृतजलको दूर करके सब लोक कष्टसाध्य विषरूप दवाइयोंके पीछे पडनेमें अपनी पराकाष्टा कर रहे हैं। यह निःसंदेह बडाभारी आश्चर्य है। वेद मंत्रोंका उपदेश दूर रखा जाय और यदि केवल वैदिक शब्दार्थोंके साथही लोकोंका परिचय हो जाय, तो भी कितना लाभ हो सकता है।

(१०) आगे जल वाचक शब्द 'स्व-धा' है। इसका शब्दार्थ (One's own vitality)अपनी धारणा शक्ति है। जिससे शरीरकी धारणाशक्ति (Vitality)कायम रहती है उसका यह नाम है। जल अप्राप्त होनेसे मनुष्यका जीवन भी अशक्य हो जायगा, इतना इस जलका जीवनके साथ संबंध है। प्रत्येक पदार्थोंमें अपनी अपनी स्वधा शक्ति रहती है, जिससे उस पदार्थका पदार्थत्व स्थिर रहता है। प्राणियोंके शरीरमें जलके आश्रयसे उक्त स्वधाशक्ति रहती है। इसके पश्चात् निम्न शब्द देखिये (११) 'सु—क्षेम' अर्थात 'उत्तम आरोग्य' (१२) 'धरुणं' —धारक और पोषक, (१३) 'वारि' रोगोंका निवारण करनेवाला, (१४) 'शुभं' —हितकारक (१५)

' क्षत्रं '–(क्षतात् त्रायते)क्षय, क्षीणता, क्षत, व्रण आदिकोंसे बचाता है इसलिये जलका नाम क्षत्र है। (१६) सब औषधियोंका सार होनेसे इसका नाम ' रस ' है। (१७) शुद्ध जलके सेवनसे चित्तकी प्रसन्नता और अतःकरणकी तृप्ती होती है. इसलिये इस जलका नाम ' तृप्ती ' है। इस प्रकार वेदमें जलके असुद्त नाम है, जिनका विचार करनेसे जलके विविध गुणोंका विज्ञान होता है।

(१८) ' पुरीषं ' यह जलवाचक वैदिक शब्द है। ' पुरि ' अर्थात् शरीरमें जो इष्ट होता है किंवा आवश्यक होता है वह पुरीष कहलाता है। शौचशुद्धि करनेका धर्मभी इसीमें है। शरीरसे जलांश कम होनेसे बद्ध कोष्ट अथवा कब्जी होती है। (१९) जलसे शरीरका तेज बढता है इस लिये इसका वैदिक नाम 'घृत ' है। (२०) जलका से–वन करना आवश्यक होता है इसलिये इसका ' वनं ' नाम है। (२१) जलसे शांति प्राप्त होती है इस लिये इसको ' शं–वर ' अर्थात् शांतिका पोषण करनेवाला कहते हैं।

इस प्रकार जलवाचक सौ नाम अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। हरएक वेदाभ्यासी सज्जनको इनका विचार करना अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार पाठक जान सकते हैं कि जो खूबी वैदिकभाषाके शब्दोंमे है, वह किसी अन्य भाषाके शब्दोंमें नहीं है। यहां प्रत्येक शब्द एक एक स्वतंत्र रूपसे उस पदार्थका लक्षण और व्याख्यान करता है। प्रत्येक शब्द केवल शब्द मात्र नहीं है, परंतु प्रत्येक शब्द पदार्थका लक्षण बताता है। अस्तु इस

प्रकार शब्दोंका महत्व सूक्ष्मरूपसे देखनेके पश्चात वेद मंत्रोंमें जलके विषयमें जो कुछ कहा है, यहां थोडासा देखेंगे—

आपो अस्मान्मातरः शुन्ध्युवन्तु ।
घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ॥
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीः ।
उदिदाभ्यः शुचिरापूत एमि ॥

यजु. ४ । २

(मातरः आपः) हितकारक जल हम सबको (शुंध्युवंतु) शुद्ध करें । (घृत-प्वः आपः) तेजोवर्धक उदक हम सबको (घृतेन) तेजसे (पुनंतु) पवित्र करे । (देवीः आपः) दिव्य उदक (विश्वं रिपं) सब मलको शरीरसे (प्रवहन्ति) बहा देता है । (आभ्यः) इस उदकसे (शुचिः पूतः) शुद्ध और पवित्र बन कर मैं (उत् एमि) उन्नतिको प्राप्त हो जाऊंगा । तथा—

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजं ।
अपामुत प्रशस्तये देवा
भवत वाजिनः ॥ ऋ. १ । २३ । १९

(अप्सु अंतः अमृतं) जलके अंदर अमृत है । (अप्सु भेषजं) उदकके अंदर औषध है । हे देवो ! (अपां प्रशस्तये) उदककी प्रशंसा करनेके लिये (वाजिनः भवत) उत्साहित हो जाइए । इन मंत्रोंसे जलरूप औषधका महत्व वेदकी दृष्टिसे कितना है, इसका ज्ञान हो सकता है । इस मंत्रका अर्थ करते हुए म. ग्रिफिथ

साहब अपने भाषान्तरमें लिखते हैं कि In waters there is healing balm, अर्थात् जलमे रोगनिवारक दवाई है । तथा—

अप्सु मे सोमो अब्रवीद्
अन्तर्विश्वानि भेषजा ॥
अग्निं च विश्वशंभुवं
आपश्च विश्वभेषजीः ॥

ऋ. १ । २३ । २०

'मुझे सोमराजाने कहा कि (अप्सु अतः) जलके अंदर (विश्वानि भेषजा) सब औषधिया हैं । जैसा अग्नि हितकारक है उसी प्रकार (विश्वभेषजीः आपः) सब दवाइयां जलमें है । " म. ग्रिफिथका भाषान्तर —Within the waters.. dwell all balms that heal waters hold all medicines तथा—

इदमापः प्रवहत यत्किंच दुरितं मयि ॥

ऋ १ । २३ । २२

'जो कुछ दुरित मेरे मे होगा जल उसको वाहर निकाल देवे । ' इस मंत्रमें शरीरके [illegible]मत्र दोष जलद्वारा दूर होते है इस वातका उपदेश है । 'दुरित' शब्द यहां विशेष महत्वका है । (दुः—इत) अर्थात जो बुराई अदर प्रविष्ट हुई है। शरीरमे जो विजातीय दुष्ट पदार्थ (foreign matter) अंदर गया है और जिससे बीमारी आदि उत्पन्न होती है उसका नाम (दुः—इत= दुर्गत) दुरित है । यही पाप है। इसको शरीरसे बाहर निकालना और शरीरकी शुद्धि करना जलका कार्य है । इस प्रकार जल-

द्वारा शरीरकी अंतर्बाह्य शुद्धि होकर आरोग्य प्राप्त हो सकता है। तथा—

आप इद्वा उ भेषजीरापो अमीव -
चातनीः ॥ आपः सर्वस्य भेषजी -
स्तास्ते कृण्वतु भेषजम् ॥ ऋ. १०।१३७।६

'जल निश्चयसे दवाई है। जल निश्चयसे संपूर्ण रोगोंको दूर करता है। (आपः सर्वस्य भेषजोः) जल सब रोगोंका औषध है। वह जल तेरे लिये औषध होवे।' इसका भाषांतर म.ग्रिफिथ निम्न प्रकार करते हैं-- The waters have their healing power, the waters drive diseases away The waters have a balm for all, let them make medicine for thee- इससे अधिक जलका वर्णन क्या हो सकता है ?

इस प्रकार अमृत रूप जल है। उस शुद्धजलका सेवन न करते हुए दूसरे पेय पदार्थोंका स्वीकार करना यह सर्वथा हानिकारक है। शराब, भंग, चहा, काफी, सोडावाटर आदि सब पेय पदार्थ मूल शुद्ध जल पानकी अपेक्षा अत्यंत हानिकारक हैं। इसालिये धार्मिक लोकोंको उचित है कि अपने वैदिक धर्मकी आज्ञाका पालन करनेकी अभिलाषासे वे अन्य हानिकारक पेयोंको दूर करे और शुद्ध जलके प्रयोगसे अपने शरीरकी अंतर्बाह्य शुद्धि करके अपना आरोग्य संपादन करें और दीर्घ जीवन धर्मके मार्गसे व्यतीत करें।

वैदिक धर्म के अमूल्य ग्रंथ।

योग-साधन-माला।

१ संध्योपासना। योगकी रीतिसे संध्या करनेकी पद्धति। मूल्य १॥) डेढ रु.

२ संध्याका अनुष्ठान। मू. ॥) आठ आने।

३ वैदिक-प्राण-विद्या। प्राणायामपूर्वार्ध। मू. १) एक रु.।

४ ब्रह्मचर्य। सचित्र। वीर्यरक्षणके उपाय। मूल्य १।) सवा रु.।

५ योगसाधन की तैयारी। मूल्य १) एक रु।

६ आसन। शरीरस्वास्थ्य के उपाय। मू. २) दो रु.

[२] उपनिषद - ग्रंथ - माला।

१ "ईश" उपनिषद् की व्याख्या। मू. ॥=) चौदह आने।

२ "केन" उपनिषद् की व्याख्या। मू. १।) सवा रु.।

[३] आगम-निबंध-माला।

१ वैदिक-राज्य-पद्धति। मू. ।-) पांच आने।

२ मानवी-आयुष्य। मू. ।) चार आने।

३ वैदिक सभ्यता। मू. ।।।) बारह आने।

४ वैदिक-चिकित्सा-शास्त्र। मू. ।) चार आने।

५ वैदिक स्वराज्य की महिमा। मू. ।।) आठ आने।।

६ वैदिक सर्पविद्या। मू. ।।) आठ आने।

७ मृत्युको दूर करनेका उपाय। मू. ।।) आठ आने।।

८ वेदमें चरखा। मू. ।।) आठ आने।

९ शिवसंकल्पका विजय। मू. ।।।) बारह आने

१० वैदिकधर्मकी विशेषता। मू. ।।) आठ आने।

११ तर्कसे वेदका अर्थ। मू. ।।) आठ आने।

१२ वेदमें रोगजंतु शास्त्र। मू. =) तीन आने।

१३ ब्रह्मचर्यका विघ्न। मू. =) दो आने।

[४] स्वयं-शिक्षक-माला।

१ वेदका स्वयंशिक्षक। प्रथम भाग। मू. १।।) डेढ रु।

२ वेदका स्वयंशिक्षक। द्वितीय भाग। मू. १।।) डेढ रु।

[५] देवता--परिचय--ग्रंथ--माला।

१ रुद्रदेवताका परिचय । मू. ॥) आठ आने ।

२ ऋग्वेदमें रुद्र देवता । मू. ॥=) दस आने ।

३ ३३ देवताओंका विचार । मू. ≡) तीन आने।

४ देवता- विचार । मू. ≡)तीन आने ।

[६] धर्म--शिक्षाके ग्रंथ ।

१ बालकोंकी धर्म शिक्षा । प्रथम भाग । मू. -)एकआना

२ ,, ,, ,, द्वितीय भाग । मू. =)दो आने ।

३ वैदिक पाठ माला । प्रथम पुस्तक । मू. ≡)

(७) यजुर्वेदका स्वाध्याय ।

१ यजु अ० ३० । नरमेध । मू. १) एक रु.

२ यजु अ० ३२ । एक ईश्वर उपासना । मू. ॥)

३ यजु. अ० ३६ । शांतिका उपाय । मू. ॥ आठ आने

(८) ब्राह्मण बोध माला ।

१ शतपथबोधामृत । मू. ।)चार आने

मंत्री-स्वाध्यायमंडल, औंध.[जि. सातारा.]
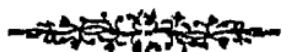
आसन।

" योग की आरोग्य वर्धक व्यायाम पद्धति "

अनेक वर्षों के अनुभवसे यह बात निश्चित हो चुकी है कि शरीर स्वास्थ्यके लिये आसनोका आरोग्य वर्धक व्यायाम ही अत्यंत सुगम और निश्चित उपाय है।

इस समय तक बाल, तरुण, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, रोगी तथा अशक्त मनुष्यों को भी इस योग की आरोग्य वर्धक व्यायाम पद्धति से बहुत ही लाभ हुआ है।

अशक्त मनुष्य इससे अपना स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं और नीरोग मनुष्य अपना स्वास्थ्य स्थिर रख सकते हैं।

इस पद्धतिका संपूर्ण स्पष्टीकरण इस पुस्तक में है। मूल्य केवल २) रु. है। शीघ्र मंगवाइये।

मंत्री-स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा)

मुद्रक तथा प्रकाशक —श्रीपाद दामोदर सातवळेकर।
भारत मुद्रणालय, स्वाध्याय मंडल, औंध (जि सातारा)